E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(2): 163-164
Received: 23-08-2019
Accepted: 25-09-2019

डॉ० सियाराम षरण गुप्त
+2 षिक्षक, टाउन उच्च विद्यालय, मुंगेर, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ० सियाराम षरण गुप्त
+2 षिक्षक, टाउन उच्च विद्यालय, मुंगेर, बिहार, भारत।

पर्यावरणीय समस्याएँः एक समीक्षा

डॉ० सियाराम शरण गुप्त

सारांश
आज पर्यावरण से ही हर व्यक्ति जीव–जन्तु एव वनस्पतियों को जीवन मिल रहा है, परन्तु पर्यावरण की स्थिति ऐसी हो गई है कि जिसे सम्भालना बहुत मुश्किल हो गया है। प्रस्तुत शोधपत्र के द्वारा वर्तमान में पर्यावरण की कौन–कौन सी समस्याएँ हैं तथा उसका निराकरण एवं समाधान किस प्रकार से किया जाय इसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। सम्प्रति पर्यावरणीय समस्याओं में जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण, वैश्विक ताप, समुद्र प्रदूषण, ओजान परत का क्षतिग्रस्त होना, अपशिष्ट विघटन, जैव–विविधता में कमी आदि समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जिसका समाधान एवं निराकरण विश्व समुदाय के लिये अति आवश्यक हो गया है। [1]

प्रस्तावना
भारत में प्राचीन काल से ही प्रकृति एवं पर्यावरण का अटूट सम्बन्ध रहा है तथा धार्मिक ग्रन्थों में प्रकृति को जो स्थान प्राप्त है वह अतुलनीय है। [2] प्रकृति की सुरक्षा के लिये हमारी संस्कृति में अनेक प्रयास किये गये, सामान्य जन को प्रकृति के साथ जोड़े रखने के लिये उसकी रक्षा, पूजन, विधान, संस्कार आदि को धर्म से जोड़ा गया है। गौ एवं अन्य जानवरों का पूजन वंश रक्षा के लिये तथा विभिन्न नदियों, पर्वतों, वृक्षों का पूजन उसकी सुरक्षा और अस्तित्व को बनाने के लिये अति आवश्यक हो गया था। परन्तु जैसे–जैसे समय व्यतीत होता गया व्यक्तियों की विचारधारा, सोच, अभिवृत्ति, आस्था, भावों आदि में परिवर्तन होता गया एवं व्यक्ति धीरे–धीरे स्वार्थी होता चला गया। प्रकृति को दोहन एवं क्षरण करता चला गया जिसका परिणाम आज हमारे सामने है। [3] हमारा परिवेश जिसमे व्यक्ति, पेड़–पौधे एवं जीव– जन्तु निवास करते हैं, वह पर्यावरण तो कहलाता है, परन्तु आज जो स्थिति उसकी है वह बहुत ही चिन्तनीय एवं व्यथित करने वाली है।
जिस पर्यावरण में रहकर व्यक्ति अपना स्वास्थ्य संवर्धन करता था वही आज उसके लिये अभिशाप बन गया है, इसके जिम्मेदार भी हम स्वयं ही हैं। हमने स्वार्थवश स्वयं का विकास एवं प्रगति करने के लिये पर्यावरण के साथ खिलवाड़ किया है और उसे प्रदूषित किया है। जिसका दुष्प्रभाव आज व्यक्ति के जीवन में विभिन्न गम्भीर बीमारियों, प्राकृतिक आपदा, जलवायु परिवर्तन आदि के रूप में परिलक्षित हो रहा है। [4]
चाणक्य ने पर्यावरण के महत्त्व को स्पष्ट करते हुये कहा है कि– किसी भी राज्य की स्थिरता पर्यावरण की स्वच्छता पर निर्भर करती है। [5] चरक संहिता में भी स्पष्ट उल्लेख है कि स्वस्थ जीवन के लिये शुद्ध वायु, जल और मिट्टी आवश्यक कारक हैं। [6] पर्यावरणीय असन्तुलन के कारण आज देश की गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, गम्भीर शारीरिक रोग जैसे– एड्स, कैंसर आदि उत्पन्न हो रहे हैं।
राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एम.एस.एस.ओ.) के सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2011–12 में देश में गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या 26 करोड़ 94 लाख थी। [7] इसी प्रकार केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली (2015) की रिपोर्ट के अनुसार एच आई बी/एड्स पीड़ितों की संख्या महाराष्ट्र में 1 लाख 59 हजार 25 रोगी हैं और यह राज्य देश में एड्स रोगियों की कुल संख्या के आधार पर प्रथम स्थान पर है। इसके बाद दूसरा स्थान आन्ध्रप्रदेश का है जहाँ 1 लाख 31 हजार 892 एड्स रोगी हैं। यह एक चिन्तनीय विषय है। यदि पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण नहीं किया गया तो भविष्य में और कई नई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। [8] इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक का यह नैतिक कर्तव्य है कि पर्यावरण को सुरक्षित तथा संरक्षित कर नैतिकता का परिचय दें। [9]

वर्तमान पर्यावरणीय समस्याएँ
जनसंख्या वृद्धि
आज देश की जनसंख्या 125 करोड़ से भी अधिक हो गई है। प्राप्त संसाधनों की कमी से उत्पन्न समस्याओं जैसे– भोजन, पानी, ईंधन की कमी तथा सामाजिक समस्याओं जैसे अपराध, भुखमरी,

बेरोजगारी, स्वास्थ्य समस्याओं आदि का बढ़ना। परिवार कल्याण मन्त्रालय की रिपोर्ट से यह बात सामने आई कि 2025 तक भारत, चीन को पीछे छोड़कर संसार का सबसे जनसंख्या वाला राष्ट्र बन जाएगा। [10]

प्रदूषण

जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण की समस्या भी बढ़ गई है। वायु, जल, मृदा आदि के प्रदूषित होने के कारण जन सामान्य, जीव–जन्तु एवं वनस्पति पर इसका प्रतिकूल प्रभाव हो रहा है। कई प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक समस्या जन्म ले रही हैं एवं अनुमान के आधार पर व्यक्ति अपने आहार–विहार के साथ लगभग 24 मिलीग्राम विषैले तत्त्व रोज ग्रहण करता है। मृदा की भी उपजाऊ क्षमता क्षीर्ण हो रही है।

वैश्विक ताप वृद्धि

इसके कारण पृथ्वी और समुद्र के तापक्रम में वृद्धि हो रही हे। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। ब्रिटेन के अर्थशास्त्री निकोलस स्टर्न की रिपोर्ट के अनुसार सन् 2100 तक धरती के तापमान में 10 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक वृद्धि सम्भावित है। जिससे मौसम परिवर्तन के खतरे के साथ 30 प्रतिशत जमीन सूखा ग्रस्त हो जाएगी। [11] संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार गंगोत्री ग्लेशियर अगले 20 से 30 सालों में समाप्त हो जाएगी। हरित ग्रह प्रभाव के संकट के कारण वायुमण्डल में ऊष्मा गैसों की वृद्धि हुई है। अम्लीय वर्षा की अधिकता हो रही है। [12]

अपशिष्ट विघटन

यह एक गंभीर समस्या है क्योंकि प्लास्टिक, कचरा, नाभिकीय अपशिष्ट आदि का नष्ट न हो पाना कई प्रकार की समस्याएँ जैसे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या, पर्यावरण आदि सम्बन्धित समस्याओं को जन्म दे रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

आज व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग निर्दयता से कर रहा है, जिसके परिणामस्वरुप जलस्तर में कमी, मृदा में विषैले तत्त्वों की बढ़ोत्तरी, वायु एवं जल प्रदूषण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार 2080 तक 3 अरब 20 करोड़ लोगों को पीने का पानी नहीं मिलेगा और महामारियों की वृद्धि के साथ उनसे निपटने के साधन कम होंगे।

जैव विविधता की कमी

स्वयं के निवास हेतु जंगलों और वृक्षों की कटाई, पशुवध, पशुपालन में कमी आदि अमानवीय कृत्यों के कारण परिस्थितकीय तन्त्र में असन्तुलन उत्पन्न हो गया है जिसका सीधा प्रभाव जीव जन्तु और वनस्पति पर हुआ है। पूर्व में पायी जाने वाली प्रजातियाँ धीरे–धीरे या तो विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं। संकटग्रस्त प्रजातियों में काला हिरण, मगरमच्छ, भारतीय जंगली गधा आदि हैं। विलुप्त प्रजातियों में एशियाई चीता, गुलाबी सिरवाली बतख शामिल हैं, पक्षियों की संख्या के गिरावट एवं विस्थापन गंभीर समस्या बन गई है।

समुद्र प्रदूषण

आज आणविक अस्त्रों का समुद्र में परीक्षण, औद्योगीकरण, जहरीले अपशिष्ट, औद्योगिक अपशिष्ट, कचरा महासागरों को प्रदूषित कर रहा है। जिससे उसमें रहने वाली मछलियाँ, जीव–जन्तु, वनस्पतियाँ रोगग्रस्त हो रही हैं। जिसका उपयोग यदि मनुष्य करते हैं तो उनमें भी विभिन्न रोग स्थानान्तरित हो जाते हैं। भाभा परमाणु अनुसन्धान केन्द्र द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार समुद्र में गिरने वाले पानी में सर्वाधिक वषैले कारक पारे का सान्द्रण हो रहा है। जिसका असर मछलियों तथा जीवों पर पड़ रहा है। हिन्द महासागर में पायी जाने वाली शार्क मछलियों में सर्वाधिक पारे की मात्रा मिली।

ओजोन परत का क्षतिग्रस्त होना

वायुमण्डल में पायी जाने वाली ओजोन परत सूर्य की पराबैंगनी किरणों से रक्षा करती है। परन्तु विषैली गैसें क्लोरीन एवं ब्रोमाइड के कारण उसमें छिद्र उत्पन्न हो गये हैं। सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर आ रही हैं, जिससे कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक विकार, पेड़–पौधों और जीव–जन्तुओं में व्याधियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

सुझाव

1. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं विकास किया जाय।
2. वनों और जंगलों का विकास वृक्षारोपण करके किया जाय तथा वनप्रबंधन को बढ़ावा दिया जाय।
3. वन्य प्राणी संरक्षण हेतु स्थानीय एवं राज्य स्तरीय प्रयास किये जाय।
4. अपशिष्ट पदार्थों के पुनश्चक्रण एवं पुनः उपयोग पर बल देकर अपशिष्ट पदार्थ का प्रबंधन किया जाय।
5. विद्यालय एवं महाविद्यालयों में 'पर्यावरण अध्ययन' एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाय।
6. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम तथा अन्य अधिनियमों का कड़ाई से पालन किया जाय।
7. वाहनों को प्रदूषण मुक्त कर सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा का उपयोग यथासंभव किया जाय।
8. पशु पालन को प्रोत्साहन एवं जैविक खाद का उपयोग कृषि हेतु किया जाय।
9. व्यक्तियों में धर्म, आध्यात्मिक एवं वैदिक कार्यों के प्रति सकारात्मक सोच एवं रुचि जागृत की जाय।

निष्कर्ष

आज पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की गंभीर समस्याएँ जन्म ले रही हैं। जिसमें योगदान व्यक्तियों का ही है। यदि समय रहते इसका निराकरण नहीं किया गया तो जीव–जन्तुओं, वनस्पतियों एवं मानव के अस्तित्व पर विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। पर्यावरण को शुद्ध, स्वच्छ एवं संरक्षित रखने की नैतिक जिम्मेदारी हमारी ही है।

सन्दर्भ

1. दैनिक भास्कर समाचार पत्र (30 जुलाई एवं 7 अगस्त 2017) दरभंगा (बिहार)
2. आधुनिक पर्यावरण समस्याओं का वैदिक समाधान, पृ.– 14
3. आधुनिक पर्यावरण समस्याओं का वैदिक समाधान, पृ.– 87
4. जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण सुरक्षा, पृ.– 237–38
5. चाणक्यदर्पण, पृ.– 43
6. चरकसंहिता, पृ.– 187
7. एम.एस.एस.ओ. का सर्वेक्षण रिपोर्ट, वर्ष– 2011–12
8. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, सर्वेक्षण रिपोर्ट– 2015
9. आधुनिक पर्यावरण समस्याओं का वैदिक समाधान, पृ.– 172
10. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, सर्वेक्षण रिपोर्ट– 2015
11. अर्थशास्त्री निकोलस स्टर्न की रिपोर्ट– 2016
12. संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट– 2014